व्यवसायी बनने में महादशा का योगदान

डॉ. सुशील अग्रवाल

महर्षि पराशर के अनुसार दशा के भेद तो अनेक हैं परन्तु सर्वसाधारण के लिए तो विंशोत्तरी दशा ही मुख्य है। मानसागरी, फलदीपिका आदि शास्त्रों ने भी इसका अनुमोदन किया है। इस लेख में हम भी केवल विंशोत्तरी दशा द्वारा ही अध्ययन कर रहे हैं।

1. विषय प्रवेश

प्राचीन समय से ही व्यवसाय को सर्वोत्तम जीविकोपार्जन का साधन माना जाता रहा है क्योंकि इसमें अधीनता का भाव नहीं होता।

जातक की कुंडली में ग्रहों की स्थिति नियत रहती है क्योंकि वह जातक के जन्म के समय की ग्रह-स्थिति है। ग्रहों की इन स्थितियों से अनेकों प्रकार के योग बनते हैं जो जातक को वर्तमान जन्म में मिलने वाले फलों की संभावना दर्शाते हैं। जातक को शास्त्र के सभी योगायोगों का फल सदैव सम्बंधित दशा काल में ही मिलता है।

प्रधानता सदैव महादशा स्वामी की होती है। अन्तर्दशा ग्रह अपना फल अपने बलाबल के अनुसार और महादशा स्वामी द्वारा प्रदत्त फलों को अपने कारकत्व एवं स्वामित्व के अनुसार प्रभावित करता है इसीलिए किसी भी महादशा में फल हमेशा एक जैसा नहीं रहता, वह अन्तर्दशा के अनुसार परिवर्तनशील होता है।

महर्षि पराशर के अनुसार ग्रहों के स्वभाववश साधारण और स्थानादिवश विशिष्ट दो प्रकार के फल होते हैं। फलदीपिका के दशाफल के अध्याय के अनुसार शुभता या अशुभता निम्न कारणों से होती है:

- नैसर्गिक शुभत्व या पापत्व।
- ग्रह किन भावों के स्वामी हैं (लघु पाराशरी नियम)।
- ग्रह किस भाव में बैठे हैं (शुभ या अशुभ) ।
- ग्रह किन ग्रहों के साथ हैं।
- ग्रह किन ग्रहों से दृष्ट हैं।
- ग्रह का दशवर्ग में एवं षड्बल में बल।
- अस्त तो नहीं है।

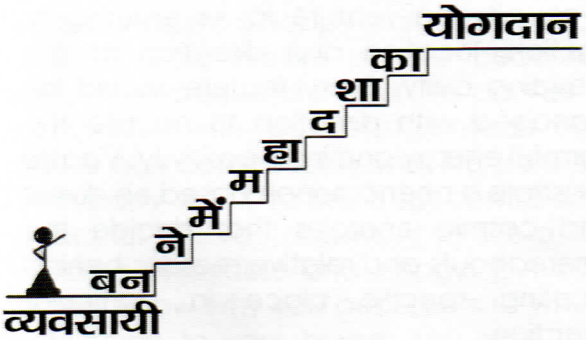

2. आर्ष साहित्य

यह तथ्य सर्वविदित एवं आर्ष साहित्य द्वारा अनुमोदित है कि जातक की कुंडली में सर्वप्रथम व्यवसायी बनने के योग होने चाहिए और अगर उचित समय पर शुभ एवं उपयुक्त दशा भी मिल जाय तो जातक कम बाधाओं के साथ अपना व्यवसाय जमा लेता है। प्रतिकूल दशा कुंडली के योगों को फलीभूत होने का वातावरण प्रदान नहीं करती।

आर्ष साहित्य में व्यवसायी बनने के योगों का वर्णन स्पष्ट नहीं है। इस लेख में हम अनेकों कुंडलियों का अध्ययन करके यह जानने का प्रयास कर रहे हैं कि व्यवसाय शुरू करते समय किस महादशा का योगदान होता है। योगों एवं गोचर पर चर्चा इस लेख के दायरे से बाहर है।

3. परिकल्पना और उदाहरण

इस लेख में महादशा से सम्बंधित कोई परिकल्पना पूर्व-निर्धारित नहीं की जा रही है। उदाहरणों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जाएगा कि किन भावेशों का व्यवसाय शुरू करते समय योगदान रहता है।

क्रम	जन्म विवरण
01	12-Feb-1965, 7:30 Hrs, Agra
02	14-Nov-1975, 21:45 Hrs, Jind
03	07-Nov-1965, 6:18 Hrs, New Delhi
04	8-Aug-1968, 14:50 Hrs-, New Delhi
05	7-Jan-1978, 2:35 Hrs-, Gurgaon
06	30-Sep-1974, 02:07 Hrs-, New Delhi
07	16-Dec-1974, 19:50 Hrs-, New Delhi
08	02-Oct-1968, 19:00 Hrs-, Pathankot
09	10-Feb-1970, 17:21 Hrs-, New Delhi
10	23-Nov-1961, 08:47 Hrs-, Bhopal
11	14-Oct-1971, 17:15 Hrs-, Sri Ganga Nagar
12	05-Jun-1964, 15:50 Hrs-, New Delhi
13	04-Sep-1978, 8:25 Hrs-, New Delhi
14	1-Jul-1966, 3:32 Hrs-, Kanpur
15	20-Jan-1953, 18:53 Hrs-, Tirunevali
16	11-Dec-1966, 18:30 Hrs-, Ajmer
17	02-Dec-1971, 22:54 Hrs-, Morena
18	02-Jul-1964, 10:20 Hrs-, Meerut
19	21-Sep-1972, 18:50 Hrs-, New Delhi
20	23-Feb-1954, 00:15 Hrs, Allahabad
21	04-Sep-1978, 08:20 Hrs-, New Delhi
22	02-Apr-1961, 00:48 Hrs-, New Delhi
23	04-Jul-1932, 06:34 Hrs-, Bangur
24	20-Jul-1973, 00:58 Hrs-, Gwalior
25	11-Mar-1964, 14:10 Hrs-, Ahmedabad

उपरोक्त कुंडलियों का आकलित परिणाम निम्न सारणी में प्रस्तुत किया जा रहा है :

क्रम	लग्न	महादशा भाव स्वामित्व	ग्रह	L/LL, X/XL से सम्बन्ध
01	कुंभ	LL	शनि	√
02	कर्क	IVL/XIL	शुक्र	√
03	तुला	LL	शुक्र	√
04	वृश्चिक	IIL/VL	गुरु	√
05	तुला	LL	शुक्र	√
06	कर्क	IIIL/XIIL	बुध	√
07	कर्क	IX	गुरु	X
08	मेष	XL/XIL	शनि	√
09	कर्क	LL	चन्द्र	√
10	धनु	LL	गुरु	√
11	मीन	IXL	मंगल	X
12	तुला	LL	शुक्र	√
13	कन्या	LL (राशिश)	राहु	√
14	वृषभ	LL	शुक्र	√
15	कर्क	IVL/XIL	शुक्र	√
16	मिथुन	VL/XIIL	शुक्र	√
17	सिंह	VL/VIIIL	गुरु	√
18	सिंह	XL/IIIL	शुक्र	√
19	मीन	XIL/XIIL	शनि	X
20	वृश्चिक	IIIL/IVL	शनि	√
21	कन्या	LL (राशिश)	राहु	√
22	धनु	LL/IVL	गुरु	√
23	कर्क	VIIL/VIIIL	शनि	√
24	मेष	XL/XIL	शनि	√
25	मिथुन	VIIL/XL	गुरु	√

4. निष्कर्ष : उपरोक्त अध्ययन से निम्न निष्कर्ष निकलता है:

- 84% कुंडलियों में व्यवसाय शुरू करते समय केन्द्रेश या त्रिकोणेश की महादशा थी और उसका सम्बन्ध लग्न/लग्नेश या दशम/दशमेश से था।
- 8% कुंडलियों (कुंडली 7 एवं 11) में व्यवसाय शुरू करते समय केन्द्रेश या त्रिकोणेश की महादशा तो थी परन्तु उसका सम्बन्ध लग्न/लग्नेश या दशम/दशमेश से नहीं था।
- 4% कुंडलियों (कुंडली 6) में व्यवसाय शुरू करते समय केन्द्रेश या त्रिकोणेश की महादशा नहीं थी परन्तु महादशा का सम्बन्ध लग्न/लग्नेश या दशम/दशमेश से था।
- शेष 4% कुंडलियों (कुंडली 19) में व्यवसाय शुरू करते समय न तो केन्द्रेश या त्रिकोणेश की महादशा थी और न ही महादशा का सम्बन्ध लग्न/लग्नेश या दशम/दशमेश से था।

पिछले लेखों में व्यवसायी बनने के योगों पर चर्चा की जा चुकी है इसीलिए इस लेख में केवल योग होने के पश्चात दशा के योगदान का ही आकलन किया गया है।

निष्कर्षतः, कुंडली में यदि व्यवसायी बनने के योग हों और उचित समय पर अनुकूल दशा मिल जाय तो जातक सुगमता से अपना व्यवसाय जमा लेता है। ❐